आवश्यक होता है कि नेता सम्मानित और प्रतिष्ठित होते हैं। साधारण बात है कि जितना ही बड़ा नेता होगा उसका उतना ही अधिक सम्मान व प्रतिष्ठा होती है।

(II) अनुगामियों का आदर्श :— किसी भी समूह में वही व्यक्ति नेता होता है जिसे अन्य लोग आदर्श मानते हैं। जब तक वे उसे आदर्श मानते रहेंगे तब तक वह व्यक्ति उस दल का नेता बना रहेगा।

(III) नेता की आज्ञा शिरोधार्य :— 'करो या मरो' के सिद्धान्त पर किसी के अनुगामी अपने नेता के पीछे रहते हैं। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ऐसे ही नेता थे। तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा।

(IV) सत्कार के पात्र :— नेता और अनुगामियों के परस्पर व्यवहार में अनुगामी सदैव नेता का सत्कार करते हैं। उनको ध्यान से सुनते हैं तथा चोट पहुँचाने पर लोग अपनी जान पर खेल जाते हैं।

(V) नेता और अनुगामी दोनों ही एक-दूसरे से प्रभावित :— यहाँ ध्यान देने योग्य बात है कि नेता व अनुगामी परस्पर एक-दूसरे से प्रभावित रहते हैं। एक सफल नेता को अनुगामियों के मनोविज्ञान पर सदैव दृष्टि रखनी चाहिए एवं उनका सम्मान करना चाहिए।

(VI) समूह के व्यवहार को निर्धारित करना :— समूह में जितने भी लोग होते हैं वे सभी नेता के सुझावों व आज्ञाओं का पालन करते हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि समूह में नेता की स्थिति श्रेष्ठतम होती है।

आवश्यक होता है कि नेता सम्मानित और प्रतिष्ठित होते हैं। साधारण बात है कि जितना ही बड़ा नेता होगा उसका उतना ही अधिक सम्मान व प्रतिष्ठा होती है।

(II) अनुगामियों का आदर्श :— किसी भी समूह में वही व्यक्ति नेता होता है जिसे अन्य लोग आदर्श मानते हैं। जब तक वे उसे आदर्श मानते रहेंगे तब तक वह व्यक्ति उस दल का नेता बना रहेगा।

(III) नेता की आज्ञा शिरोधार्य :— 'करो या मरो' के सिद्धान्त पर किसी के अनुगामी अपने नेता के पीछे रहते हैं। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ऐसे ही नेता थे। तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा।

(IV) सत्कार के पात्र :— नेता और अनुगामियों के परस्पर व्यवहार में अनुगामी सदैव नेता का सत्कार करते हैं। उनको ध्यान से सुनते हैं तथा चोट पहुँचाने पर लोग अपनी जान पर खेल जाते हैं।

(V) नेता और अनुगामी दोनों ही एक-दूसरे से प्रभावित :— यहाँ ध्यान देने योग्य बात है कि नेता व अनुगामी परस्पर एक-दूसरे से प्रभावित रहते हैं। एक सफल नेता को अनुगामियों के मनोविज्ञान पर सदैव दृष्टि रखनी चाहिए एवं उनका सम्मान करना चाहिए।

(VI) समूह के व्यवहार को निर्धारित करना :— समूह में जितने भी लोग होते हैं वे सभी नेता के सुझावों व आज्ञाओं का पालन करते हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि समूह में नेता की स्थिति श्रेष्ठतम होती है।

B.A - I - (H)
PAPER - II

नेतृत्व
LEADERSHIP

आम बोलचाल की भाषा में नेता से तात्पर्य उस व्यक्ति से होता है जो आगे आकर दूसरों के लिए कार्य तथा मार्ग निर्धारित करे, लेकिन मनोवैज्ञानिक अर्थ में नेता का अर्थ अलग ही है। मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोणों से नेता अनुयायियों के द्वारा स्वयं प्रभावित होते हुए भी अपने अनुयायियों को प्रभावित करे, व्यवहार अथवा कार्यों को इस प्रकार निर्देशित व नियन्त्रित करता है कि उनके सामान्य हितों की पूर्ति सम्भव हो।

विस्तार से जानने के लिए विभिन्न विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाओं को जानना आवश्यक है :—

(I) किम्बाल यंग के अनुसार, "नेतृत्व एक प्रभुत्वपूर्ण और प्रतिष्ठित पद है जो दूसरों के व्यवहार को नियंत्रित करने, मार्ग दिखाने अथवा व्यवहार का मार्ग दिखाने की योग्यता द्वारा अर्जित किया जाता है।"

(II) लापीयर तथा फ्रांसवर्थ का मानना है कि, "नेतृत्व वह व्यवहार है जो दूसरे व्यक्ति के व्यवहार को अधिक प्रभावित करता है जितना की दूसरे लोगों का ~~प्रभाव~~ व्यवहार नेता को प्रभावित करता है।"

(III) मैकाइवर एवं पेज के अनुसार, "नेतृत्व से हमारा तात्पर्य लोगों को ~~प्रभावित~~ प्रोत्साहित करने अथवा निर्देशित करने की वह योग्यता है जो पद के अलावा व्यक्तिगत गुणों से की जाती है।"

है, तो मुख्य-मुख्य बातें स्पष्ट होती है।

(i) पूर्व शिक्षण या अनुभव (ii) धारण क्रिया
(iii) प्रत्याह्वान तथा (iv) प्रत्यभिज्ञा या पहचानना

इन सभी का चर्चा करना भी हमारे आवश्यक है।—

(i) पूर्व शिक्षण या अनुभव :— जैसा कि हम देख सकते है कि पूर्व में घटित घटना, विषयवस्तु या कार्य का स्मरण, सीखने की प्रक्रिया पर निर्भर करती है। स्मृति के लिए पूर्व शिक्षण का होना अनिवार्य है। जैसे :— जब हम टाईप करना सीखते है तो टाइप का अगला पाठ सीखने से पहले, पहलेवाले पाठ की स्मृति सहायक होती है।

(ii) धारण क्रिया :— पूर्व में प्राप्त अनुभव या शिक्षण के प्रभाव हमारे मस्तिष्क में विद्यमान रहते है तो इसे ही धारणाक्रिया कहते है। ये अनुभव मस्तिष्क में किस रूप में रहते है — इस संबंध में ठीक-ठीक वर्णन करना तो कठिन है, लेकिन प्रयोगात्मक अध्ययनों के आधार पर सामान्यतः यह माना जाता है कि हमारे अनुभवों या सीखे गए विषयों के प्रभाव स्मृतिचिन्हों के रूप में मस्तिष्क में अंकित हो जाते है। जिसे धारणाक्रिया कहते है।

(iii) प्रत्याह्वान :— Recall का अर्थ to call again होता है अर्थात जब हम किसी पूर्व घटना को

है, तो मुख्य-मुख्य बातें स्पष्ट होती हैं।
(i) पूर्व शिक्षण या अनुभव (ii) धारणा क्रिया
(iii) प्रत्याह्वान तथा (iv) प्रत्यभिज्ञा या पहचानना

इन सभी का चर्चा करना भी हमारे आवश्यक है! —

(i) पूर्व शिक्षण या अनुभव :— जैसा कि हम देख सकते हैं कि पूर्व में घटित घटना, विषयवस्तु या कार्य का स्मरण, सीखने की प्रक्रिया पर निर्भर करती है। स्मृति के लिए पूर्व शिक्षण का होना अनिवार्य है। जैसे :— जब हम टाईप करना सीखते हैं तो टाइप का अगला पाठ सीखने में पहले, पहलेवाले पाठ की स्मृति सहायक होती है।

(ii) धारणा क्रिया :— पूर्व में प्राप्त अनुभव या शिक्षण के प्रभाव हमारे मस्तिष्क में विद्यमान रहते हैं तो इसे ही धारणाक्रिया कहते हैं। ये अनुभव मस्तिष्क में किस रूप में रहते हैं — इस संबंध में ठीक-ठीक वर्णन करना तो कठिन है, लेकिन प्रयोगात्मक अध्ययनों के आधार पर सामान्यतः यह माना जाता है कि हमारे अनुभवों या सीखे गए विषयों के प्रभाव 'स्मृतिचिन्हों' के रूप में मस्तिष्क में अंकित हो जाते हैं। जिसे धारणाक्रिया कहते हैं।

(iii) प्रत्याह्वान :— Recall का अर्थ to call again होता है अर्थात जब हम किसी पूर्व घटना को

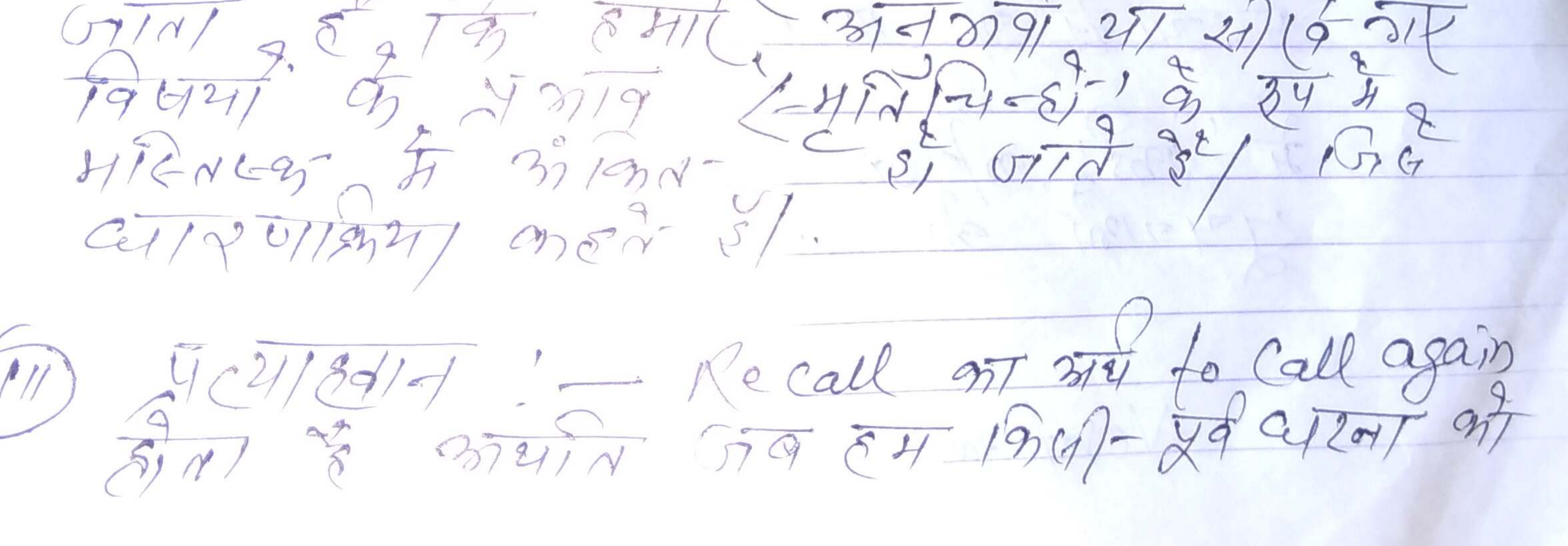

B.A-I-(H)
PAPER-I

स्मरण एवं विस्मरण

REMEMBERING AND FORGETTING

दैनिक जीवन में किया गया कोई भी कार्य को जब हम याद करते हैं तो उनमें से बहुत सारी बातें तो स्मरण में रहती और कुछ बातों को भूल जाते हैं जिसे विस्मरण कहते हैं।

परंतु ध्यान देने योग्य बात है कि स्मरण कोई आंतरिक शक्ति नहीं है बल्कि यह भी दूसरी मानसिक प्रक्रिया जैसे- प्रत्यक्षीकरण, संवेदना, चिंतन आदि की तरह यह एक मानसिक प्रक्रिया है।

स्मरण को समझने के लिए कुछ मनोवैज्ञानिकों द्वारा दी गई परिभाषा को जानना होगा।-

1. चैपलिन 1975 :- पूर्व में सीखे गए विषयों को याद करना तथा वर्तमान चेतना में लाने की प्रक्रिया को स्मरण कहते हैं।
2. वुडवर्थ के शब्दों में "स्मृति जो कुछ पहले से सीखा गया, उसे याद रखते हैं।"
3. विलियम मैक्डूगल के शब्दों में - "स्मृति का अर्थ भूतकाल में अनुभव किये हुए रूप में घटनाओं की कल्पना करना एवं पूर्व अनुभव से पहचानना।"

अगर हम परिभाषाओं पर ध्यान

(vii) समूह के अन्य सदस्यों पर नियंत्रण :- विशेष प्रकार के सम्बन्धों से नेतृत्व की प्रक्रिया निश्चित होती है।

स्पष्ट है कि नेतृत्व एक विशेष प्रकार की भूमिका होती है जो अनुगामियों को प्रभावित करती है। साथ ही समूह या समाज में ही फलता-फूलता है।

Next day.

Hrishi Kesh lal
Deptt. Psychology.
B.M.C. Rahika